International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2022; 2(2): 107-110
www.educationjournal.info
Received: 03-08-2022
Accepted: 26-09-2022

डॉ. प्रवीण कुमार सिंह
शोध निर्देशक, शिक्षा संकाय, सल्तनत बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदलापुर, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

मनीष कुमार पासवान
शिक्षा संकाय, सल्तनत बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदलापुर, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. प्रवीण कुमार सिंह
शोध निर्देशक, शिक्षा संकाय, सल्तनत बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदलापुर, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

डॉ. प्रवीण कुमार सिंह, मनीष कुमार पासवान

सारांश
यह अत्यावश्यक है कि विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास हेतु मनोवैज्ञानिक कारकों से शिक्षक परिचित हों। विभिन्न मनोवैज्ञानिक कारक एक दूसरे को किसी न किसी प्रकार से प्रभावित करतेहैं। प्रस्तुत शोध में संवेगात्मक बुद्धि का सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव को जानने का प्रयास किया गया है। शोध से प्राप्त निष्कर्षो के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि का सृजनात्मकता पर धनात्मक प्रभाव पाया गया है। यदि किसी छात्र में संवेगात्मक बुद्धि अधिक हो तो उसे सृजनात्मक कार्यों की ओर प्रेरित किया जा सकता है। उसी प्रकार संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि में भी धनात्मक सह–संबंध पाया गया। यदि किसी उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि संतोषप्रद न हो तो संभावित कारणों का पता लगाकर तथा संवेगात्मक बुद्धि के विकास द्वारा समस्या का समाधान किया जा सकता है।

कूट शब्दः संवेगात्मक बुद्धि, सृजनात्मकता, शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तावना
व्यक्ति के मानसिक विकास में संवेगों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है। सुखद संवेगात्मक स्थिति होने पर मानसिक स्वास्थ्य में भी वृद्धि होती है। साथ ही उसको सभी मानसिक शक्तियाँ एवं क्षमताएँ अधिक सक्रियता से कार्य करने में सहयोग करती हैं अर्थात् मानसिक स्वास्थ्य हेतु सकारात्मक संवेगात्मक बुद्धि का होना आवश्यक है। यह भी सत्य है कि बुद्धि एवं सृजनात्मकता में संबंध होता है। बच्चों की सृजनात्मकता की प्रवृत्ति ज्ञात होने पर उन्हें नवीन आविष्कार एवं अनुसंधान के लिए प्रेरित कर उनका आत्मबल एवं विश्वास बढ़ाया जा सकता है। अतः बच्चों में सृजनात्मक क्षमता का विकास करने के लिए एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि के लिए सकारात्मक संवेगात्मक वातावरण के निर्माण पर ध्यान दिया जाना चाहिए ।

संवेगात्मक बुद्धि
संवेगात्मक बुद्धि एक आन्तरिक योग्यता होती है जिसके द्वारा व्यक्ति में संवेगों को महसूस करने, समझने एवं उनका प्रभावपूर्ण नियन्त्रण करने की क्षमता का विकास होता है। जिसके द्वारा व्यक्ति अपने संवेगों को पहचानता है, संवेगों का उचित प्रकटीकरण करता है तथा दूसरों के संवेगो को समझकर उसके सामने वैसा ही व्यवहार करता है। संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति की अपनी भावनाओं तथा दूसरों की भावनाओं की पहचान कर सकने की क्षमता से है, जिसकी सहायता से वह अपने को अभिप्रेरित कर सके और अपने अन्दर पाए जाने वाले संवेगों एवं उनके आधार पर बने सम्बन्धों को ठीक से व्यवस्थित कर सके। अतरू संवेगात्मक बुद्धि वह क्षमता होती है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने संवेगों तथा व्यवहार को नियन्त्रित करके एक कुशल व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत होता है।

सृजनात्मकता
सृजनात्मकता को साधारण शब्दों में इस प्रकार समझा जा सकता है कि यह मनुष्य द्वारा विविध क्षेत्रों में की गई प्रगति एवं विकास है। मौलिक चिंतन, पुरानी समस्याओं के नवीन समाधान, सृजनशीलता तथा जीवन के भिन्न क्षेत्रों में नवीन दृष्टिकोण अपनाना सृजनात्मकता है। मनुष्य में नित नया करने की इच्छा करती है, जो व्यक्ति नवीन कार्यों को अंजाम देते हैं, उनमें सृजनात्मकता की अपार संभावनाएं होती है।
किन्हीं व्यक्तियों में सृजनशीलता का गुण प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। यह एक बहु अमूल्य निधि है जिस पर प्रगति, उन्नति तथा उत्थान निर्भर करता है। सृजनशील व्यक्ति प्रत्येक युग एवं प्रत्येक काल में पाये जाते हैं। सृजनशीलता वैसे तो प्रत्येक प्राणी में पायी जाती है लेकिन मनुष्य में यह सर्वाधिक पायी जाती है क्योंकि मानव एक बुद्धिमान प्राणी माना गया है। प्रत्येक व्यक्ति में सृजनशीलता समान रूप से नहीं पायी जाती है, समान बुद्धि–लब्धि के व्यक्तियों में भी सृजनशीलता समान नहीं होती है।

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि परीक्षणों का शिक्षा प्रक्रिया में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। इससे विद्यार्थियों के ज्ञान की जाँच उचित ढंग से की जा सकती है। उनकी सफलता के आधार पर श्रेणीकरण करके उन्हें आगे की कक्षा में भेजा जाता है।साधारणतः शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ ज्ञान प्राप्त करना एवं कौशल का विकास करना है। इसका आंकलन एक शैक्षिक वर्ष में परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर, शिक्षकों द्वारा करायी गयी शैक्षिक क्रियाओं के आधार पर या दोनों माध्यमों से किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि का महत्व प्रत्येक शिक्षण कार्य में अत्यन्त आवश्यक है इससे विद्यार्थी की बौद्विक स्तर के उन्नयन का पता चलता है। विद्यार्थियों की विषय सम्बन्धी कठिनाईयों और कमजोरियों का निदान किया जाता है। साथ ही साथ परीक्षाफल के आधार पर शिक्षक अपनी अध्ययन विधि की सफलता का पता लगा सकता है और आवश्यकतानुसार उसमें परिवर्तन करके उसे अधिक प्रभावकारी बना सकता है।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध का कथन है "संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन"

शोध के उद्देश्यः – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का पता लगाना।
2. संवेगात्मक बुद्धि एवं सृजनात्मकता में सहसंबंध ज्ञात करना ।
3. संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध ज्ञात करना ।
4. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि की तुलना करना ।
5. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की तुलना करना ।
6. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना ।

परिकल्पनाएँः – प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं–

1. संवेगात्मक बुद्धि एवं सृजनात्मकता में धनात्मक सहसंबंध नहीं होगा।
2. संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसंबंध नहीं होगा।
3. उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं होगा।
4. उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
5. ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।
6. ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं होगा।
7. ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।

परिसीमनः– प्रस्तुत शोध गोरखपुर जिले की 02 शहरी एवं 02 ग्रामीण शासकीय उच्चतर माध्यमिक शालाओं के कक्षा 9वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों तथा सामाजिक विज्ञान एवं विज्ञान विषय में उनकी शैक्षिक उपलब्धि तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया

शोध विधिः – प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोगकिया गया।

न्यादर्शः – प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में गोरखपुर जिले की 02 शहरी तथा 2 ग्रामीण शालाओं के 100 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि द्वारा किया गया। ग्रामीण तथा शहरी दोनों क्षेत्रों से न्यादर्श के रूप में 50 बालक तथा 50 बालिकाओं का चयन किया गया ।

उपकरणः – उपकरणों का प्रयोग किया गया है – प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु निम्नलिखित

1. सृजनात्मकता मापनी डॉ. बी.के. पासी, प्रोफेसर एंड हेड (रिटायर्ड), देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी, इंदौर (मध्यप्रदेश) – प्रकाशन वर्ष 1971,
2. संवेगात्मक बुद्धि मापनी – श्री अनुकूल हायड (इंदौर), श्री संजोत पेठे (अहमदाबाद), श्री उपिन्दर धर (अहमदाबाद) – प्रकाशन वर्ष 1971,

चर (Variables) दृ प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है –

1. स्वतंत्र चर – संवेगात्मक बुद्धि
2. आश्रित चर – सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि
3. सहचर – 1. लिंग छात्रध्छात्राएँ 2. क्षेत्र ग्रामीण/शहरी

सांख्यिकीय विश्लेषण – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (ज मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

सारिणी क्रमांक 1: "विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सृजनात्मकता में धनात्मक सहसंबंध नहीं होगा।"

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				विशेष
			M	SD	df	r	
1	संवेगात्मक बुद्धि	100	112.1	33.82	398	0.61	धनात्मक सहसंबंध
2	सृजनात्मकता	100	37.93	13.36			

संवेगात्मक बुद्धि एवं सृजनात्मक के मध्यमान क्रमशः 112.1 तथा 37.93, मानक विचलन 33.82 तथा 13.36 है। त का मान 0.61 पाया गया जो कि धनात्मक सहसंबंध दर्शाता है। विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सृजनात्मकता में धनात्मक सहसंबंध पाया गया। अतः परिकल्पना 01 अस्वीकृत हुई।

सारिणी क्रमांक 2: संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसंबंध नहीं होगा।

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				विशेष
			M	SD	df	r	
1	संवेगात्मक बुद्धि	100	112.1	33.82	398	0.55	धनात्मक सहसंबंध
2	सृजनात्मकता	100	45.01	20.042			

विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 112.1 तथा 45.01, मानक विचलन 33.82 तथा 20.042 है। r का मान 0.55 पाया गया जो कि धनात्मक सहसंबंध दर्शाता है। अतः परिकल्पना 02 अस्वीकृत हुई।

सारिणी क्रमांक 03: उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं होगा।

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				विशेष
			M	SD	df	t	
1	संवेगात्मक बुद्धि	100	56.64	18.75	198	3.44	धनात्मक सहसंबंध
2	सृजनात्मकता	100	31.60	19.5			

उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों के मध्यमान क्रमशः 56.64 एवं 31.60 है तथा t का मान 0.05 विश्वास स्तर पर प्राप्त मान से अधिक है। अतः उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना–03 अस्वीकृत हुई।

सारिणी क्रमांकदृ 04: उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				विशेष
			M	SD	df	t	
1	संवेगात्मक बुद्धि	100	48.33	11.23	198	1.02	धनात्मक सहसंबंध
2	सृजनात्मकता	100	31.60	19.5			

उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 48.33 तथा 31.60, मानक विचलन 11.23 तथा 19.5 व t मान 1.02 पाया गया जो 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी मान से कम है अर्थात् सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसलिए परिकल्पना. 04 स्वीकृत हुई।

सारिणी क्रमांक 05: ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				विशेष
			M	SD	df	t	
1	संवेगात्मक बुद्धि	100	113.3	31.26	198	0.58	धनात्मक सहसंबंध
2	सृजनात्मकता	100	25.5	14.50			

सार्थकता 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं। परीक्षण से प्राप्त मान 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं।
ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान क्रमशः 113.3 तथा 25.5, मानक विचलन 31.26 तथा 14.50 व t मान 0.58 पाया गया जो 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी मान से कम है अर्थात् सार्थक अंतर नहीं पाया गया । अतः परिकल्पना 05 अस्वीकृत हुई।

सारिणी क्रमांक 06: ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं होगा।

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				विशेष
			M	SD	df	t	
1	संवेगात्मक बुद्धि	100	45.75	20.55	198	0.61	धनात्मक सहसंबंध
2	सृजनात्मकता	100	44.29	20.34			

ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता का मध्यमान क्रमशः 45.75 तथा 44.29, मानक विचलन 20.55 तथा 20.34 व t मान 0.61 पाया गया। यह मान 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी मान से कम है सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना 06 अस्वीकृत हुई।

सारिणी क्रमांक 07: ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				विशेष
			M	SD	df	t	
1	संवेगात्मक बुद्धि	100	35.79	10.31	198	0.61	धनात्मक सहसंबंध
2	सृजनात्मकता	100	25.5	14.50			

ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 35.79 तथा 25.5 मानक विचलन 10.31 तथा 14.50 व t मान 0.61 पाया गया जो 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी मान से कम है अर्थात् सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना 07 स्वीकृत हुई।

निष्कर्ष

प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं –

1. विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और सृजनात्मकता में धनात्मक सह–संबंध पाया गया।
2. विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह–संबंध पाया गया।
3. उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर पाया गया। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता अधिक पायी गयी।
4. उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

5. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में अन्तर नहीं पाया गया।
6. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर नहीं पाया गया।
7. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर नहीं पाया गया।

सुझावः– शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं

1. संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव बुद्धि लब्धि पर पड़ता है। अतः बच्चों की संवेगात्मक बुद्धि को विकसित किया जाए।
2. संवेगात्मक बुद्धि द्वारा सामाजिक गुण विकसित होते हैं। बच्चों में संवेगात्मक बुद्धि को विकसित किए जाने से समरसता, सहयोग, मित्रता जैसे गुण विकसित होंगे।
3. सृजनात्मक क्षमता विकसित करने हेतु शाला में बच्चों को नवीन मौलिक उत्पादक कार्य करने हेतु प्रेरित किया जाए।
4. E.Q. बढ़ने से शैक्षिक उपलब्धि में भी वृद्धि होती है। शालेय वातावरण ऐसा हो कि बच्चे मिलकर अपना कार्य स्वयं करें। शिक्षक कक्षा कार्य में बच्चों की समान रूप से सहभागिता लें।
5. उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले बच्चों में सृजनात्मक क्षमता अधिक होती है जो बच्चे सृजनात्मक कार्यों में रूचि नहीं लेते उनको प्रेरित किया जाये। वाद–विवाद, सेमीनार, भ्रमण, स्काउट–गाइड, सांस्कृतिक कार्यक्रम कराए जायें।

संदर्भ

1. सिंह, सुरेश कुमार (2013). माध्यमिक स्तरीय विद्यालयों के छात्रों की अध्ययन आदतों एवं अध्ययन अभिवृत्ति का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर ।
2. सरमादी, मो० रजा एवं अन्य (2016). द इम्पैक्ट ऑफ लेक्चरर्स थिंकिंग स्टाइल्स ऑन स्टूडेन्ट्स क्रियेटिव इन डिस्टेन्ट्स हायर एजूकेशन, तुर्कीस ऑनलाइन जर्नल ऑफ डिस्टेन्स एजूकेशन, 17 (4), पृ0 105–117
3. हाफिज, कसवार (2016). लर्निंग स्टाइल एण्ड सेल्फ–कन्सेप्ट ऑफ हाई एण्ड लो क्रियेटिव स्टूडेन्ट्स ऑफ नवोदय विद्यालय स्कूल्स ऑफ कश्मीर वैली, एन इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिस्पिलनरी रिसर्च, ॥(1), 1–14।
4. गुप्ता, एस० पी० एवं गुप्ता, अलका (2007), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन शारदा पुस्तक भवन, पी० एच० डी०, इलाहाबाद।
5. सिंह, अरुण कुमार (2009) शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, पी०एच०डी०, पटना ।
6. हरलाक, ई०वी० (1979), डेवलपमेन्टल साईकोलोजी, टी० एम० एव० पब्लिकेशन, नईदिल्ली।
7. आई० ए० गेटस एवं जरसील (1958), शिक्षा मनोविज्ञान, न्यूयार्क।
8. कपिल, एच. के० (2009), सांख्यिकीय के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
9. पी० डी०पाठक, (2009), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
10. मंगल, एस० के० (2010), शिक्षा मनोविज्ञान पी० एच० आई० लर्निंग प्रावेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
11. भटनागर, सुरेश (2010), शिक्षा मनोविज्ञान, आर०.लाल बुक डिपो, मेरठ।
12. काशीनाथ, एच० एम० (2003), एड्जस्टमेंट कम्पोनेंट ऑफ स्टूडेंट्स स्टडींग इन जवाहर नवोदय विद्यालय, ए० कलस्टर एनालिसिस,जनरल ऑफ कम्यूनिटी गाईडेन्स एण्ड रिसर्च